अध्याय 31

याकूब का अपने परिवार समेत लाबान से बिदाई

जब याकूब छ: अतिरिक्त वर्ष अपने ससुर की सेवा कर चुका तब एक गंभीर झगड़ा सामने खड़ा हो गया (31:41)। उसके जानवर बढ़ते और बलवान होते चले गए और उनकी तुलना में लाबान के जानवरों का कम और निर्बल होते जाने से परिवार में एक भयंकर परिस्थिति उत्पन्न हो गई।

परमेश्वर द्वारा याकूब को कूच करने की आज्ञा मिलना (31:1-16)

**1फिर लाबान के पुत्रों की ये बातें याकूब के सुनने में आई, कि याकूब ने
हमारे पिता का सब कुछ छीन लिया है, और हमारे पिता के धन के कारण उसकी
यह प्रतिष्ठा है। 2और याकूब ने लाबान के मुखड़े पर दृष्टि की और ताड़ लिया, कि
वह उसके प्रति पहले के समान नहीं है। 3तब यहोवा ने याकूब से कहा, अपने
पितरों के देश और अपनी जन्मभूमि को लौट जा, और मैं तेरे संग रहूंगा। 4तब
याकूब ने राहेल और लिआ: को, मैदान में अपनी भेड़-बकरियों के पास, बुलवा
कर कहा, 5तुम्हारे पिता के मुखड़े से मुझे समझ पड़ता है, कि वह तो मुझे पहिले
की नाईं अब नहीं देखता; पर मेरे पिता का परमेश्वर मेरे संग है। 6और तुम भी
जानती हो, कि मैं ने तुम्हारे पिता की सेवा शक्ति भर की है। 7और तुम्हारे पिता
ने मुझ से छल करके मेरी मज़दूरी को दस बार बदल दिया; परन्तु परमेश्वर ने
उसको मेरी हानि करने नहीं दिया। 8जब उसने कहा, कि चित्ती वाले बच्चे तेरी
मज़दूरी ठहरेंगे, तब सब भेड़-बकरियां चित्ती वाले ही जनने लगीं, और जब
उसने कहा, कि धारी वाले बच्चे तेरी मज़दूरी ठहरेंगे, तब सब भेड़-बकरियां धारी
वाले जनने लगीं। 9इस रीति से परमेश्वर ने तुम्हारे पिता के पशु ले कर मुझ को दे
दिए। 10भेड़-बकरियोंके गाभिन होने के समय मैं ने स्वप्न में क्या देखा, कि जो
बकरे बकरियों पर चढ़ रहे हैं, सो धारी वाले, चित्ती वाले, और धब्बे वाले है।
11और परमेश्वर के दूत ने स्वप्न में मुझ से कहा, हे याकूब: मैं ने कहा, क्या आज्ञा।
12उसने कहा, आंखें उठा कर उन सब बकरों को, जो बकरियों पर चढ़ रहे हैं,
देख, कि वे धारी वाले, चित्ती वाले, और धब्बे वाले हैं; क्योंकि जो कुछ लाबान
तुझ से करता है, सो मैं ने देखा है। 13मैं उस बेतेल का ईश्वर हूं, जहां तू ने एक**

खम्भे पर तेल डाल दिया, और मेरी मन्नत मानी थी: अब चल, इस देश से निकल कर अपनी जन्मभूमि को लौट जा। [14]तब राहेल और लिआ: ने उससे कहा, क्या हमारे पिता के घर में अब भी हमारा कुछ भाग वा अंश बचा है? [15]क्या हम उसकी दृष्टि में पराये न ठहरीं? देख, उसने हम को तो बेच डाला, और हमारे रूपे को खा बैठा है। [16]सो परमेश्वर ने हमारे पिता का जितना धन ले लिया है, सो हमारा, और हमारे लड़केबालों का है: अब जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा सो कर।

आयत 1. याकूब के सुनने में आया कि लाबान के पुत्र उसकी सफलता पर कुढ़ रहे है और यह कह रहे ही कि **याकूब ने हमारे पिता का सब कुछ छीन लिया है**, जिससे उसकी यह **प्रतिष्ठा** हुई है (देखें 30:35)। **लाबान के पुत्रों** को ऐसा लगने लगा की उनके लिए बहुत ही कम संपत्ति बची है। याकूब ने पहले ही अपने भाई एसाव के पहलौठेपन को ले लिया था (25:29-34); अब उसने अपनी पत्नियों के भाइयों की संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा भी प्राप्त कर लिया था।

आयत 2. याकूब ने लाबान के मुखड़े पर दृष्टि की और ताड़ लिया, कि वह उसके प्रति पहले के समान नहीं है। “व्यवहार” פָּנֶה *(पनेह)* का शाब्दिक अर्थ है “सूरत”; KJV में “मुख मुद्रा” शब्द का इस्तेमाल हुआ है। लाबान का चेहरा और अन्य संकेत इस बात को ज़ाहिर कर रहे थे कि उसके अन्दर अपने दामाद की बढ़ती संपत्ति को देखकर नकारात्मक भाव उत्पन्न हो चुके थे। क्योंकि यह परिणाम था जिससे वह बच रहा था, लाबान का व्यवहार और प्रवृत्ति याकूब के प्रति मित्रतापूर्ण नहीं रही थी जैसा पहले कभी हुआ करती थी।

आयत 3. इसलिए **यहोवा परमेश्वर ने याकूब से कहा, अपने पितरों** [अब्राहम और इसहाक] **के देश और अपनी जन्मभूमि को लौट जा** उसने यह कह कर उसे आश्वासन दिया कि **मैं तेरे संग रहूँगा।**[1] इसने उस प्रतिज्ञा को जो परमेश्वर ने याकूब से बेतेल में की थी, पुनः दोहराया: “मैं तेरे संग रहूंगा, और जहां कहीं तू जाए वहां तेरी रक्षा करूंगा” (28:15)।

आयत 4. तब **याकूब ने राहेल और लिआ: को**, **मैदान में** अपनी भेड़-बकरियों के पास **बुलवा लिया**। उसने अपनी पारिवारिक सभा में सम्मिलित होने के लिए अपनी रखेलों को नहीं बुलवाया और न ही दास दसियों को (30:43)। उसने स्पष्ट रूप से यही सोचा की गोपनीयता बनाए रखना बहुत ज़रुरी है, उसे विश्वास था की राहेल और लिआ: दोनों ही अपने पिता की तरफ़ ना जाकर उसकी तरफ़ ही होंगे। यह जानते हुए की लाबान कितना नीच और चालू किस्म का था, याकूब को कहीं न कहीं ये भय भी लगा होगा की कहीं उसके घर से कोई उसके ससुर के लिए जासूसी तो नहीं कर रहा है।

आयत 5. वार्तालाप के दौरान, याकूब ने अपनी पत्नियों से कहा की उसने **पिता के मुखड़े** पर भाव वैसा नहीं **दिखता** था जैसा पहले था; परंतु इस बात को उसने दावे के साथ कहा कि उसके **पिता का परमेश्वर** लगातार उसके साथ है और उसे आशीषित कर रहा है। लाबान किस तरह का व्यक्ति था इस बात को जानते

हुए याकूब का डर जायज़ था कि वह अपने ससुर को अपने जाने के विषय में कुछ न बताये। अगर लाबान को यह अंदेशा हो जाता कि वे जाने की योजना बना रहे है तो वह कुछ भी कर के उन्हें रोकने का प्रयास करता - शायद आवशकता पड़ने पर हिंसात्मक भी हो सकता था।

आयतें 6, 7. याकूब ने अपनी पत्नियों उन सभी विश्वासयोग्य सेवाओं का स्मरण दिलाया जो उसने उनके पिता के लिए किए था: **तुम भी जानती हो, कि मैं ने तुम्हारे पिता की सेवा शक्ति भर की है, और तुम्हारे पिता ने मुझ से छल करके मेरी मज़दूरी को दस बार बदल दिया।** संख्या "दस" यहाँ प्रतीकात्मक रूप में है, जिसका अर्थ है कि उनके पिता कई बार वायदों को तोड़ा और कई बार उसके साथ धोखे और बेईमानी से पेश आया। अन्य अनुवाद में "समय और बार-बार" आया है (NJPSV) और "समय दर समय" (CEV) में देखने को मिलता है। समझदारी दिखाते हुए उसने विवाह के दौरान किए गए धोखे का ज़िक्र नहीं किया; क्योंकि वह जानता था इस विषय में बोलने से राहेल और लिआ: के बीच झगड़ा हो सकता है और अभी उसे उन दोनों की भरोसे और सहायता की ज़रूरत थी ताकि वे कनान से निकल सके। हालांकि याकूब ने यह भी कहा की ऐसे बुरे बर्ताव के बावजूद **परन्तु परमेश्वर ने उसको मेरी हानि करने नहीं दिया।**

आयत 8. बीते छ: वर्षों का विस्तृत विवरण देने के बजाय, उसने कण शब्दों यह बताया कि किस तरह से परमेश्वर ने उनके पिता की चालाकियों को उस पर हावी होने नहीं दिया: अगर लाबान ने याकूब को **चित्ती वाले** भेड़-बकरियां देने का वायदा किया तो भेड़-बकरियां **चित्ती वाले** बच्चे **जनने लगेंगी।** अगर लाबान ने कहा कि **धारी वाले तेरी मज़दूरी ठहरेंगे** तो सारे झुंड ने **धारी वाले** बच्चे **जनने लगेंगी**।

आयत 9. लाबान के पुत्रों की लगाए दोष की उसने उनके पिता की सारी **संपत्ति** हड़प ली (31:1), के बदले कुलपति ने सारा धन्यवाद और श्रेय यहोवा को दिया। उसने अपनी पत्नियों से कहा, **इस रीति से परमेश्वर ने तुम्हारे पिता के पशु ले कर मुझ को दे दिए।** उसकी भौतिक आशीषें उसकी अपनी बुद्धि और चालाकियों का नतीजा नहीं पर परमेश्वर द्वारा प्रबंध किया हुआ है 30:37-43)।

आयतें 10-13. हारान छोड़ने की पीछे उसके बचाव में सबसे मज़बूत तर्क जो उसकी योजना को न्यायसंगत ठहराता, वह सब आखिर में आया, जब उसने कहा कि **परमेश्वर के दूत** ने उसे **स्वप्न** में दर्शन दिया है (31:11)। उसने कहा कि यह उस मौसम में हुआ जब जानवरों का सहवास का समय था (31:10) तो शायद वह पतझड़ का मौसम रहा होगा। भेड़े और बकरियों का यह प्रजनन का समय होता है जो पाँच महीनों तक चलता है उसके बाद बसंत में वे जन्म देती हैं, ठीक ऊन कतरने की प्रक्रिया के बाद (31:19)। याकूब ने कुछ पाँच महीनों की प्रतीक्षा की इससे पहले की वह परमेश्वर की आज्ञा का पालन करे, वह लाबान के साथ अपने सालाना चरवाही के अनुबंध के पूरे होने की प्रतीक्षा कर रहा था।

अपने स्वप्न में उसने **देखा** था, कि जो बकरे **बकरियों पर चढ़ रहे हैं, वे धारी वाले**, **चित्ती वाले**, **और धब्बे वाले है** (31:10)। दूत ने उससे बातें की और कहा **हे**

याकूब और उसने उत्तर दिया, **क्या आज्ञा** (31:11)। दूत ने उससे आँखें **उठा कर** उन **सब बकरों को**, जो बकरियों **पर चढ़ रहे हैं,** देखने को कहा**,** कि **वे धारी वाले**, **चित्ती वाले**, **और धब्बे वाले हैं** (31:12)। इस के अलावा दूत इस बात से भी अज्ञान नहीं था कि **लाबान** ने याकूब के खिलाफ़ षड्यंत्र और बेईमानी का खेल खेला था। उसने उपलक्षिता की, वैसे ही जैसे 31:9, इस रीति से परमेश्वर ने तुम्हारे पिता के पशु ले कर मुझ को दे दिए। अंत में उस दूत ने अपना परिचय देते हुए कहा कि वह परमेश्वर का दूत है, जिसके द्वारा यहोवा कभी खुद को प्रकट करता है। उसने याकूब से कहा **मैं उस बेतेल का ईश्वर हूं, जहां तू ने एक खम्भे पर तेल डाल दिया**, **और मेरी मन्नत मानी थी** [देखें 28:10-22[2]]; **अब चल**, **इस देश से निकल कर अपनी जन्मभूमि को लौट जा** (31:13)। अपनी पत्नियों के आगे रखने के लिए याकूब का यही आखिरी और सबसे ठोस तर्क था। परमेश्वर ने यह वादा किया था के वह याकूब की पूरी यात्रा के दौरान उसके साथ रहेगा और हारान से उसे कनान देश में पहुँचायेगा, जहाँ उसका वंश गिनती में बहुत होंगे “भूमि की धूल के समान” (28:14, 15)।

आयतें 14-16. अपनी पत्नियों से चर्चा करने के बाद, याकूब को उन्हें वहां से निकालने में ज़्यादा तकलीफ़ नहीं हुई। बल्कि, **राहेल और लिआ:** उसके निर्णय का समर्थन करते हुए जल्दी से जल्दी वहां से निकल जाना चाहती थी - उनके पिता ने उनके पति के साथ जो बुरा व्यवहार किया था सिर्फ़ इसलिए नहीं पर वे जाने की इच्छुक अपने संग हुए व्यवहार के कारण भी थी। उन्होंने पूछा **क्या हमारे पिता के घर में अब भी हमारा कुछ भाग वा अंश बचा है?** (31:14)। यह एक शिकायत के रूप में किया गया प्रश्न था, कि क्या लाबान के घर में उनका कुछ भी बाकी है, क्योंकि उसने उनके साथ पराये या **परदेशियों** के समान ही व्यवहार किया था (31:15)। चौदह वर्ष की सेवा के एवज में **बेचा** था, और अकेले **रूपे को खा बैठा** है (אָכַל, *आकाल)* उसे “समाप्त कर दिया” (KJV; ASV; ESV) था (31:15)। शायद प्राचीन हारान में ऐसी प्रथा थी कि पिता वधु को मिले धन का कुछ हिस्सा अपनी विवाहित बेटियों के लिए रखता है। इस मामले में, परमेश्वर ने याकूब के कारण लाबान और उसकी संपत्ति को भी बढ़ाया था (30:27-30; 31:41), उनके लिए कुछ भी छोड़ा नहीं गया था।

चूंकि पीछे छ: साल की सेवा में वह बार-बार याकूब को धोखा देने और छल करने का यत्न करता था, इसलिए उनके पिता की जानवरों के झुंड में भारी गिरावट आई थी, जबकि उनके पति याकूब की जानवर संख्या में अधिक और बलवान हृष्ट पुष्ट हो गए थे। इसलिए लाबान असल में अपनी बेटियों और उनके **लड़केवालों** को भी धोखा दे रहा था उनसे वह **धन** लूटने की कोशिश में जिस पर उनका अधिकार था। धन प्राप्त करने का लोभ और दुष्टता से भरी चालों से संपत्ति इकट्ठा करने की इच्छा ने राहेल और लिआ: को उससे विमुख कर दिया था। उन्होंने अपने पिता पर से भरोसा खो दिया था कि वह कभी भी उनसे न्याय से पेश आएगा, उन्होंने याकूब से कहा, **अब जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा सो कर** (31:16)।

याकूब का गोपनीयता से कूच करना (31:17-21)

[17]तब याकूब ने अपने लड़के बालों और स्त्रियों को ऊंटों पर चढ़ाया; [18]और जितने पशुओं को वह पद्दनराम में इकट्ठा करके धनाढ्य हो गया था, सब को कनान में अपने पिता इसहाक के पास जाने की मनसा से, साथ ले गया। [19]लाबान तो अपनी भेड़ों का ऊन कतरने के लिए चला गया था। और राहेल अपने पिता के गृहदेवताओं को चुरा ले गई। [20]सो याकूब लाबान अरामी के पास से चोरी से चला गया, उसको न बताया कि मैं भागा जाता हूं। [21]वह अपना सब कुछ ले कर भागा: और महानद के पार उतर कर अपना मुंह गिलाद के पहाड़ी देश की ओर किया।

आयतें 17, 18. क्योंकि राहेल और लिआ ने, अपने पति के प्रति परमेश्वर की बुलाहट को अनुकूल रूप से प्रतिसाद दिया, और हारान छोड़कर कनान लौटने के लिए तैयार हुईं, तो **याकूब** ने प्रस्थान करने की तैयारी करने के विशाल कार्य को आरम्भ किया। इस समय तक, उसकी चार पत्नियाँ, एक दर्जन लड़के वालों, पुरुष और स्त्री सेवकों का समूह, और पशुओं के झुण्ड थे (30:43; 32:13-15)। याकूब ने अपनी पत्नियों और बच्चों को **ऊंटों** पर बैठाया और अपने समूह और यात्रा के लिए आवश्यक सभी वस्तुओं को इकठ्ठा किया, **और जितने पशुओं को वह पद्दनराम में इकट्ठा करके धनाढ्य हो गया था, सब को कनान** ले गया कि अपने **पिता इसहाक** के पास जाए। उन सभी पशु-समूहों और संपत्ति के साथ जो उसने पद्दनराम में इकठ्ठा किए थे (28:1, 2 पर टिप्पणियां देखें); फिर वे उसके पिता इसहाक के पास जाने को कनान देश के लिए निकल पड़े।

आयत 19. लाबान याकूब के प्रस्थान से अनभिज्ञ था क्योंकि वह और उसके पुत्र कुछ दिनों के लिए अन्य चरवाहों के साथ अपनी भेड़ों का ऊन कतरने के लिए इकठ्ठा हुए थे (देखें 38:12, 13; 1 शमूएल 25:2-8; 2 शमूएल 13:23-25)। पहली झलक में, यह विचित्र लगता है की ना लाबान और न ही उसके पुत्रो को भेड़ों की कतरनी के समय याकूब की कमी का एहसास हुआ था। परन्तु, शायद यह दिखाता है की मामा और भांजे के बीच का मनमुटाव इतना बढ़ चुका था की याकूब को अपनी भेड़ों की कतरनी के लिए कहीं और जाना पड़ा होगा।

जब लाबान घर से दूर था तब **राहेल ने उन गृहदेवताओं** (תְּרָפִים, *थरापिम)* को चुराया था, जो उसके पिता के थे (देखें न्यायियों 18:17)। ये उसके पिता के देवताओं की छोटी प्रतिमाएं थी जिन्हें राहेल काठी के अन्दर छिपा पाई थी (13:34), नाकि मानवाकार प्रतिमाएं जो दाऊद के समय में सामान्य थीं (1 शमूएल 19:13-16)।

लाबान के पास गृह देवताओं की प्रतिमाएं थी इससे यह संकेत मिलता है की वह एक बहुदेववादी रहा था, अनेक देवताओं में विश्वास करने वाला। हालाँकि पहले उसने यह माना था की "प्रभु" (याहवे) ने उसे याकूब के कारण आशीषित किया था (30:27),[3] फिर भी उसके मिसुपुतामिया के देवताओं के प्रति उसकी

श्रद्धा बरक़रार थी, और इसीलिए उनकी चोरी एक गंभीर अपराध था (31:30-32)।

राहेल ने अपने पिता के गृहदेवताओं कि प्रतिमाओं को क्यूँ चुराया? इस प्रश्न के कई संभावित उत्तर हैं। पहला, यदि उसका याहवे में कुछ मात्र में विश्वास था भी, तो वह सोचती होगी की इन देवताओं को रखना उसकी प्रजनन शक्ति को निश्चित करेगा या कनान की यात्रा के दौरान उनके परिवार को सुरक्षा प्रदान करेगा। याकूब की यात्रा के दौरान कई लोगों ने अपने गृहदेवताओं को अपने पास रखा था, जब वे कनान में पहुंचे। उस कुलपति को अपने लोगों को झिड़कना पड़ा ताकि वे उन्हें त्याग दे, और उसने उन सब वस्तुओं को शकेम में एक सिन्दूर के पेड़ के निचे गाड़ दिया (35:2-4)। पाठ यह नहीं बताता की उस अवसर पर गाड़ी गई वस्तुओं में राहेल द्वारा चुराई प्रतिमाएं भी शामिल थी या नहीं।

दूसरी सम्भावना यह है की राहेल ने अपने पिता के गृहदेवताओं को द्वेष और क्रोध के कारण चुराया था क्योंकि उसने उसे और लिआ को याकूब को इस प्रकार से बेच दिया था जैसे की वे कोई व्यापार की वस्तुएं थीं। कई वर्ष बीत जाने पर, लाबान ने उनकी खरीदारी की कीमत को खर्च कर दिया था और उनके लिए कुछ भी नहीं छोड़ा था (31:14, 15)। इसीलिए, प्रतिमाओं को चुराना शायद राहेल का तरीका था, अपने पिता के दुर्व्यवहार का बदला लेने का।

एक तीसरा सुझाव मीसुपुतामिया की नुज़ी तख्तियों (ईसा-पूर्व पंद्रहवी सदी) से आता है, जिसमें बताया गया है की किसी के पास गृहदेवता का होना उसके, संपत्ति के प्रमुख हिस्से के, क़ानूनी अधिकार की ओर संकेत करता है।[4] यह विशेष मामलों में पाया गया था, खासकर जिनमे बेटियां, दामाद, या दत्तक पुत्र शामिल हों।[5] परन्तु, यदि राहेल का उद्देश्य अपने आप को या याकूब को अपने पिता की जायदाद का प्रमुख वारिस घोषित करना था, तो स्वाभाविक प्रश्न यह है वह इसको अमल में कैसे ला सकती थी, क्योंकि वह और उसका पति अपने पारिवारिक घर से भाग कर कनान को जा रहे थे, प्रत्यक्ष रूप से, सदा के लिए। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर की आशीष के कारण, याकूब अब लाबान से अधिक धनवान बन गया था। उनके, भविष्य में, हारान को वापस लौटकर उसके भाइयों का सामना करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। क्योंकि पाठ राहेल के अपने पिता के देवताओं की चोरी का कोई कारण नहीं बताता, कोई भी सुझाव परिकल्पना के दायरे में सिमट कर रह जाता है।

आयत 20. लाबान ने उन बीस वर्षों में याकूब को कई बार धोखा दिया था; अब **याकूब लाबान अरामी के पास से चोरी से चला गया, उसको न बताया कि मैं भागा जाता हूं।** इब्रानी पाठ में "धोखा" के बजाय एक अधिक शाब्दिक शब्द है "उसने अपने ससुर का दिल चुरा लिया।" जिस शब्द का प्रयोग राहेल के गृहदेवताओं की चोरी के लिए किया गया है उसी शब्द को यहाँ आयत 19 में दोहराया गया है। वह लाबान की प्रतिमाएं "चुरा" (גָּנַב, *गनब)* लाई, जबकि याकूब ने उसका दिल "चुरा" *(गनब)* लिया था। पाठ लाबान के दुःख और क्रोध का वर्णन करता है, जो उसे याकूब के प्रस्थान के विषय में जान कर हुआ। जैसे की

उसका दामाद, उसका दिल लेकर उसके बेशकीमती सामन के साथ, फरार हो गया था। याकूब उसकी बेटियों, उसके नातियों, और उन अधिकतर झुंडों और पशु समूहों को ले गया था जिसका प्रबंध परमेश्वर ने, लाबान का छल उलट कर, उसके लिए किया था।

आयत 21. इसीलिए, **याकूब अपना सब कुछ लेकर भागा**, और **महानद के पार उतरकर** अपना **मुँह गिलाद के पहाड़ी देश की ओर किया**, जो कि गलील के समुद्र के दक्षिणी ओर था, यर्दन नदी की पूर्वी दिशा में। उसने बीस वर्ष पहले कनान से हारान की यात्रा लगभग खाली हाथ की थी; और अब वह एक धनवान व्यक्ति के रूप में घर लौट रहा था, अलबत्ता एक भगौड़े के रूप में।

लाबान का पीछा करना और पूछताछ (31:22-35)

22तीसरे दिन लाबान को समाचार मिला की याकूब भाग गया है। 23इसलिए उसने अपने भाइयों को साथ लेकर उसका सात दिन तक पीछा किया, और गिलाद के पहाड़ी देश में उसको जा पकड़ा। 24परन्तु परमेश्वर ने रात के स्वप्न में अरामी लाबान के पास आकर कहा, "सावधान रह, तू याकूब से न तो भला कहना और न बुरा।" 25और लाबान याकूब के पास पहुँच गया। याकूब अपना तम्बू गिलाद नामक पहाड़ी देश में खड़ा किए पड़ा था; और लाबान ने भी अपने भाइयों के साथ अपना तम्बू उसी पहाड़ी देश में खड़ा किया। 26तब लाबान याकूब से कहने लगा, "तू ने यह क्या किया कि मेरे पास से चोरी से चला आया, और मेरी बेटियों को ऐसा ले आया, मानो तलवार के बल से बंदी बनाई गई हों? 27तू क्यों चुपके से भाग आया, और मुझसे बिना कुछ कहे मेरे पास से चोरी से चला आया; नहीं तो मैं तुझे आनंद के साथ मृदंग और वीणा बजवाते, और गीत गवाते विदा करता? 28तू ने तो मुझे अपने बेटे बेटियों को चूमने तक न दिया? तू ने मुर्खता की है। 29तुम लोगों की हानि करने की शक्ति मेरे हाथ तो है; पर तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने मुझसे बीती हुई रात में कहा, 'सावधान रह, याकूब से न तो भला कहना और न बुरा।' 30भला अब तू अपने पिता के घर का बड़ा अभिलाषी होकर चला आया तो चला आया, पर मेरे देवताओं को तू क्यों चुरा ले आया है?" 31याकूब ने लाबान को उत्तर दिया, "मैं यह सोचकर डर गया था कि कहीं तू अपनी बेटियों को मुझसे छीन न ले। 32जिस किसी के पास तू अपने देवताओं को पाए, वह जीवित न बचेगा। मेरे पास तेरा जो कुछ निकले, उसे भाई-बंधुओं के सामने पहिचानकर ले ले।" क्योंकि याकूब न जानता था की राहेल गृहदेवताओं को चुरा ले आई है। 33यह सुनकर लाबान, याकूब, और लिआ: और दोनों दसियों के तम्बुओं में गया; और कुछ न मिला। तब लिआ के तम्बू में से निकलकर राहेल के तम्बू में गया। 34राहेल तो गृहदेवताओं को ऊँट की काठी में रखके उन पर बैठी थी। लाबान ने उसके सारे तम्बुओं में टटोलने पर भी उन्हें न पाया। 35राहेल ने अपने पिता से कहा, "हे मेरे प्रभु; इस से अप्रसन्न न हो कि मैं तेरे सामने नहीं उठी; क्योंकि मैं मासिकधर्म से हूँ।" अतः उसे ढूंढने पर भी गृहदेवता उसको न

मिले।

आयतें 22, 23. तीन दिन बीत जाने तक, **लाबान** को यह एहसास ही नहीं हुआ की **याकूब भाग गया** है। जब उसको खबर मिली की उसका दामाद चला गया है, तो उसने **अपने भाइयों** को इकठ्ठा किया। स्पष्ट है, की उसने अपने सम्पूर्ण गोत्र को इसीलिए शामिल किया ताकि उसका सैन्यबल बेहतर हो। उन्होंने **सात दिनों की यात्रा करके** याकूब और उसके समूह का **पीछा किया** और **गिलाद के पहाड़ी देश में उसको जा पकड़ा**। जो शब्द "पीछा करना" (רָדַף, *रादाप)* है उसका प्रयोग अक्सर संकेत देता "किसी एक मनुष्य का या एक समूह का दूसरे का पीछा करना युद्ध करने या बदला लेने के लिए" की ओर।[6]

वह वाक्यखण्ड "सात दिनों की यात्रा" एक मुश्किल पैदा करता है, क्योंकि हरान से गिलाद तक की यात्रा की दूरी 350 मील की थी। इस दूरी को एक सप्ताह में तय करने के लिए लाबान और उसके साथियों को प्रतिदिन पचास मील कि दूरी तय करनी थी, और यह काफ़ी ज़्यादा लगता है। इसीलिए, "सात दिन" का अर्थ साधारणतया अंदाज़ा या बहुत अधिक दिन कहने का मुहावरा हो सकता है।

लाबान याकूब को जल्दी क्यों नहीं पकड़ पाया? जबकि, याकूब के समूह के स्त्रियाँ, बच्चे, भेड़ें और अन्य जानवर बड़ी धीमी गति से चल रहे होंगे। तीन तथ्यों को याद रखना चाहिए। पहला, याकूब का समूह तीन दिन पहले निकल चुका था। दूसरा, क्योंकि वे लाबान से भाग रहे थे, उसके लोग तेज़ गति से बढ़ रहे होंगे और जानवरों को सख्ती से हांक रहे होंगे, नाकि जैसा सामान्य स्थिति में होता है। तीसरा, याकूब के प्रस्थान का समाचार पाने के बाद, लाबान को अपनी भेड़ों की कतरनी करने, पुरुषों को इकठ्ठा करने, और यात्रा के लिए सामन लादने के लिए शायद कुछ और दिन लगे होंगे।

आयत 24. याकूब के पीछा किए जाने के दौरान, **परमेश्वर अरामी लाबान को स्वप्न में प्रकट हुआ** और उसे चेतावनी दी कि **याकूब से न तो भला कहना और न बुरा**। यह जानते हुए की लाबान का उद्देश्य अपने दामाद से झगड़ा करना था, परमेश्वर ने उसे याकूब को किसी भी तरीके से धमकाने या हानि पहुँचाने से सख्त मना किया। ऐसा करके परमेश्वर बेतेल में याकूब से की अपनी प्रतिज्ञा का पालन कर रहा था, उसकी रक्षा करने और उसे कनान देश में सुरक्षित लौटा लाने की (28:15)।

आयत 25. लम्बी यात्रा के बाद, **लाबान याकूब के पास पहुँच गया**, जिसने **अपना तम्बू गिलाद नामक पहाड़ी देश में खड़ा किया था**। उसी प्रकार, लाबान ने भी अपने भाइयों के साथ अपना तम्बू **उसी पहाड़ी देश में खड़ा किया**। दोनों पक्ष यार्दन नदी के पूर्व में थे, और यहाँ दिया वर्णन एक ही सामान्य क्षेत्र की पर्वत की चोटियों की ओर संकेत करता है, जैसे की मिज़पा और गिलाद पहाड़ी,[7] जहाँ से विरोधी पक्ष एक दूसरे को देख सकते थे।

आयत 26. एक द्वेषपूर्ण नीयत के साथ, **लाबान याकूब** के पास जाता है और

प्रश्न करने लगता है: **"तू ने यह क्या किया ... ?"** इसी प्रकार का प्रश्न एक दोष लगाने वाला करता है जब उसे विश्वास होता है की अपराधी ने अनुचित ढंग से बर्ताव किया है (3:13; 4:10; 12:18; 20:9; 26:10)। फिर से, दुविधा इन दोनों पुरुषों की कहानी में उपस्थित है; क्योंकि याकूब ने लाबान से कुछ ऐसा ही प्रश्न किया था अपने विवाह के बाद वाली सुबह को, जब उसे पता चला था की उसके ससुर ने राहेल से लिआ को बदल कर उसे धोखा दिया है (29:25)। लाबान ने अपने प्रश्न के बाद एक निर्लज्ज पूर्ण तरीके से दोष लगाया जिसमें उसने कहा की याकूब ने उसे धोखा दिया है और उसकी **बेटियों को ऐसे ले आया, मानो तलवार के बल से बंदी बनाई गई हों**।

यहाँ, लाबान अपने शब्द चुनकर बोल रहा था अपने उन कुटुम्बियों को प्रभावित करने के लिए जो याकूब का पीछा करने हुए उसके साथ आए थे। वह एक चोट पहुंचाए हुए पिता की तरह बोल रहा था, जैसे की उसकी बेटियों को उनकी इच्छा के विरुद्ध युद्ध के बंदियों के सामान ले जाया गया था। लाबान यह नहीं जानता था की राहेल और लिआ दोनों याकूब के साथ भागने के लिए सहमत हुई थीं अपने पिता के लालच और छल से बचने के लिए। याकूब के बजाय, वह लाबान था जिसने उनसे "पराए" और दासों सा व्यव्हार किया था (31:15)।

आयतें 27, 28. याकूब के प्रति पाखंड से भरी निंदा चलती रही। लाबान इस तरह बर्ताव कर रहा था जैसे की वह एक पीड़ित था और याकूब वह निर्दयी राक्षस जो **चुपके** से भागा था, उसे **मृदंग और वीणा** बजवाने के साथ विदा करने के आनंद से वंचित करते हुए (अय्यूब 21:12; लूका 15:25)।

अभी भी उन कुटुम्बियों की भावनाओं को आकर्षित करते, जो सुन रहे थे, और शायद अपनी बेटियों की भी, उसने याकूब पर इतना कठोर होने का दोष लगाया की उसने **लाबान को** उसके **पुत्रों** (जो की नाती है)[8] को चूमने और अपनी **पुत्रियों** को अलविदा कहने की अनुमति भी नहीं दी (देखें रूत 1:9, 14)। जो लाबान को जानते थे उन्हें निश्चित रूप से पता था की लाबान कभी याकूब को उसकी बेटियों और नातियों को अपने साथ लेकर कनान देश लौटने नहीं देता। उसने हर संभव प्रयास किया था उन्हें जाने से रोकने का।

आयत 29. हालाँकि निश्चित रूप से, लाबान के पास, याकूब पर अपनी बेटियों और नातियों के अपहरण का दोष लगाकर, उसको **हानि पहुँचाने** या उसकी हत्या करने की भी **शक्ति** थी, वह इन पारिवारिक सदस्यों को पूरी तरह से पराया नहीं करना चाहता था। उसका उद्देश्य अपने दामाद को कुछ और वर्ष बलपूर्वक अनुचित दासत्व में रखने का हो सकता है - परन्तु **परमेश्वर** ने उससे कहा था, **"सावधान रह, याकूब से न तो भला कहना और न बुरा"** (31:24)। परमेश्वर याकूब का रक्षक था, और लाबान को उसके साथ कठोरता से व्यव्हार करने से रोका गया था।

आयत 30. इस समय, ऐसा प्रतीत हो रहा था की लाबान याकूब से सहानुभूति रखता है क्योंकि वह अपने **पिता के घर** जाना चाहता है, जिससे वह

लम्बे समय से दूर रहा है। परन्तु, लाबान ने अपने आपको रोकने का प्रयास नहीं किया जब उसने अगला प्रश्न पूछा। उसके दामाद के प्रति उसका गुस्सा छलक पड़ा जैसे उसने मांग की, **"मेरे देवताओं को तू क्यों चुरा ले आया है?"**

आयत 31. अंतत, **याकूब** ने लाबान के दोषारोपण का उत्तर दिया। उसने यह माना की उसने गुप्त रूप से अपनी संपत्ति और परिवारजनों को लेकर प्रस्थान करके, पारिवारिक प्रथा का उल्लंघन किया है। परन्तु, उसने कहा की वह यह सोचकर डर गया था कि कहीं लाबान उससे **अपनी बेटियों को छीन न ले**।

आयत 32. दूसरे प्रश्न के विषय में, याकूब ने लाबान के **देवताओं** के विषय में कुछ भी जानने से इंकार किया; और उसने उस व्यक्ति के लिए मृत्यु की शपथ ली जिसके पास वे देवता पाए जाएं। वह दृढ़तापूर्वक अपने निर्दोष होने का दावा कर रहा था, और उसकी शपथ यह संकेत देती है वह भी इस चोरी को एक गंभीर अपराध के रूप में देखता था। याकूब इस बात से अनभिज्ञ था की उसके परिवार के एक सदस्य ने ही लाबान की वस्तुएं चुराई थीं, तो उसने उसे सारे सामान में ढूंढने की और जो कुछ उसका हो उसे वापस लेने की अनुमति दे दी। इस खतरनाक और रोमांचकारी स्थिति का वर्णन करते हुए, पाठ टिपण्णी करता है कि **याकूब न जानता था की राहेल** [उसकी चहेती पत्नी] **गृहदेवताओं को चुरा ले आई है** (देखें 31:19)

आयत 33. लाबान ने अपनी खोज की शुरुआत **याकूब के तम्बू** से की क्योंकि उसका मुख्य संदिग्ध याकूब ही था, परन्तु उसे कुछ नहीं मिला। फिर वह **लिआ के तम्बू** की ओर बढ़ा और ध्यानपूर्वक वहां खोजबीन की, और फिर उन **दो दासियों के तम्बू** में, परन्तु अब भी उसके देवताओं का नामोनिशान नहीं था अंतत, उसने **राहेल के तम्बू** में प्रवेश किया।

आयत 34. सारे तम्बुओं में टटोलने पर भी लाबान किसी भी तस्कर को पकड़ने में असफ़ल रहा। वह शब्द "ढूंढ" आता है *מָשַׁשׁ (मशाश)* से, एक इब्रानी शब्द जो संकेत देता है "अंधे की तरह तलाशना" का (व्यव. 28:29; अय्यूब 5:14; 12:25)। यह वही शब्द है जो उभरता है अंधे इसहाक के याकूब की बांह को महसूस करने (27:12, 22) और अंधे शमसून के मंदिर के खम्भों को महसूस करने (न्यायियों 16:26) के लिए।

रोमांच की चोटी पर पहुंचाकर, लेखक लाबान के देवताओं का ठिकाना प्रकट करता है: **राहेल तो गृहदेवताओं को ऊँट की काठी में रख कर उन पर बैठी थी।** पहले, हारान से चलते समय याकूब ने "अपने बच्चों और स्त्रियों को ऊंटों पर चढ़ाया था" यात्रा के लिए (31:17)। जैसे उन्होंने दिन के अंत में अपना डेरा डाला, सारे ऊंटों की काठियों को निकालकर सवारी करने वालों के तम्बू में रख दिया गया होगा। उत्तरी सीरिया (दसवी सदी ई.पू.) की एक नक्काशी एक ऊँट सवार को एक डिब्बे के आकर की काठी पर बैठे हुए दिखाती है, जिसमें वस्तुओं को बाँध कर रखा जा सकता था।[9] शायद इसी प्रकार की काठी का प्रयोग राहेल ने गृहदेवताओं को छिपाने के लिए किया होगा; इसने सरलता से उसके तम्बू में बैठने के स्थान का काम किया होगा।

इन प्रतिमाओं को चोरी करके और इनको छुपाकर, राहेल अपने पिता के प्रति अति निरादर दिखा रही थी। वह उसकी दृष्टी में अपनी सारी विश्वसनीयता खो चुका था, और स्पष्ट है कि वह उससे उसके पति को धोखा देने, उसकी विवाह की योजना को भंग करने, और याकूब के लिए अधिक बच्चे पैदा करने को लेकर लिआ के साथ निराशाजनक स्पर्धा के कारण के लिए, बदला ले रही थी।

आयत 35. जैसे लाबान ने राहेल की तम्बू की तलाशी ली, वह अपने ऊँट की काठी पर बैठी रही। प्राचीन निकट पूर्व क्षेत्र में, युवा पीढ़ी के अपनों से बड़ों की उपस्थिति में खड़े रहने की प्रथा थी (लैव्य. 19:32)। राहेल ने, अपने प्रत्यक्ष निरादर के लिए, **अपने पिता** के प्रश्न पूछे जाने की प्रतीक्षा नहीं की। इसके बजाय, उसने स्वयं ही नम्रतापूर्वक कहा, **"हे मेरे प्रभु;**[10] **इस से अप्रसन्न न हो कि मैं तेरे सामने नहीं उठी; क्योंकि मैं मासिकधर्म से हूँ।"** अब राहेल भी छली बन चुकी थी। उसने अपने पिता को यह जताया की उसके निकट आने के लिए महीने का समय उचित नहीं है। बाद में, मूसा की व्यवस्था के अधीन, एक स्त्री को उसके मासिकधर्म के समय अशुद्ध माना जाता था; जो कोई उसके संपर्क में आता था उसे भी दूषित माना जाता था (लैव्य. 15:19)। कुछ ऐसा ही दृष्टिकोण पहले के समय में भी प्रचलित रहा होगा, क्योंकि लाबान ने उसके स्पष्टीकरण को बिना आगे प्रश्न किए स्वीकार कर लिया था।[11]

याकूब का अपने ससुर को क्रोध भरा उत्तर (31:36-42)

36तब याकूब क्रोधित होकर लाबान से झगड़ने लगा, और कहा, "मेरा क्या अपराध है? मेरा क्या पाप है की तूने इतना क्रोधित होकर मेरा पीछा किया है? 37तू ने जो मेरी सारी सामग्री को टटोलकर देखा, तो तुझको अपने घर की सारी सामग्री में से क्या मिला? कुछ मिला हो तो उसको यहाँ अपने और मेरे भाइयों के सामने रख दे, और वे हम दोनों के बीच न्याय करें। 38इन बीस वर्षों तक मैं तेरे पास रहा; इनमें न तो तेरी भेड़-बकरियों के गर्भ गिरे, और न तेरी मेंढों का मांस मैं ने कभी खाया। 39जिसे बनैले जंतुओं ने फाड़ डाला उसको मैं तेरे पास न लाता था, उसकी हानि मैं ही उठाता था; चाहें दिन को चोरी जाता चाहें रात को, तू मुझ ही से उसको ले लेता था। 40मेरी तो यह दशा थी कि दिन को तो घाम और रात को पाला मुझे खा गया; और नींद मेरी आँखों से भाग जाती थी। 41बीस वर्ष तक मैं तेरे घर में रहा; चौदह वर्ष तो मैंने तेरी दोनों बेटियों के लिए, और छः वर्ष तेरी भेड़-बकरियों के लिए सेवा की; और तूने मेरी मज़दूरी को दस बार बदल डाला। 42मेरे पिता का परमेश्वर, अर्थात् अब्राहम का परमेश्वर, जिसका भय इसहाक भी मानता है, यदि मेरी ओर न होता तो निश्चय तू अब मुझे छूछे हाथ जाने देता। मेरे दुःख और मेरे हाथों के परिश्रम को देखकर परमेश्वर ने बीती हुई रात में तुझे डांटा।"

आयत 36. क्योंकि **लाबान** को उसकी कोई वस्तु नहीं मिली, **याकूब** अब

अपने आपको पूरी तरह संदेह से मुक्त महसूस का रहा था। उसने अपने गुस्से को व्यक्त किया, यह मांग रखते हुए, **"मेरा क्या अपराध है? मेरा क्या पाप है की तूने इतना क्रोधित होकर मेरा पीछा किया है?"** संक्षेप में, उसके ससुर के हथियार लैस पुरुषों के साथ उसका ऐसे पीछा किया था जैसे की कोई साधारण चोर उसकी बेटियों, नातियों, वस्तुओं और देवताओं को लेकर भागा हो।

आयत 37. याकूब ने लाबान को उसके उत्पीड़न और उसके ऊपर लगाए झूठे इल्जामों को उचित साबित करने की चुनौती दी। उसने पूछा, **"तू ने जो मेरी सारी सामग्री को टटोलकर देखा, तो तुझको अपने घर की सारी सामग्री में से क्या मिला?"** क्योंकि लाबान को कुछ भी नहीं मिला था, याकूब ने उपहास उड़ाया यह चुनौती देते हुए की जो भी चोरी का सामान है वह उसे याकूब के **भाइयों** और लाबान के **भाइयों** के समक्ष रखे ताकि वे उन दोनों पुरुषों के **बीच न्याय कर सके**। जॉन इ. हार्टली ने यह टिपण्णी दी है: "इस तरीके का प्रयोग करके, याकूब ने लाबान के डील-डौल को, एक परिवार के मुखिया से बदल कर समिति के समक्ष खड़े, एक साधारण व्यक्ति में बदल दिया।"[12] प्रस्तुत कुटुम्बियों और सेवकों के समक्ष लाबान एक झूठे और धोकेबाज़ के रूप में उजागर हुआ।

आयत 38. याकूब ने अभी समाप्त नहीं किया था। जितना अधिक वह उन **बीस वर्षों** में विश्वासयोग्यता से अपने ससुर की सेवा करने, जिसके दौरान उसने कोई संदेह पैदा करने वाला या बेईमानी का काम नहीं किया था, के बारे सोचता उसका क्रोध उतना ही भड़कता। उसे वो अन्याय स्मरण होने लगे जो उसने झेले थे। याकूब ने लाबान के झुंडों की इतनी अच्छी देखभाल की थी, की न तो उसकी **भेड़ों** और न ही उसकी **बकरियों** के गर्भ गिरे। याकूब ने कभी अपने मामा के झुण्ड में से किसी **मेढ़** का मांस भी नहीं खाया था (देखें यहेज. 34:3, 8, 10)।

आयत 39. इससे आगे, जब कोई **बनैले जंतु** किसी पशु पर हमला करके उसे मार डालता, तो **उसकी हानि** भी याकूब स्वयं उठाता, बजाय इसके की प्राचीन निकट पूर्व में यह सामान्य पद्धति थी की चरवाहे को ऐसी किसी हानि के लिए ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जाता था जो उसके बस के बाहर हो।[13] चरवाहों को केवल दिन के समय हुई पशुओं की चोरी के लिए लेखा देना होता था, ना कि रात में होने वाली के लिए। मालिक चरवाहे से यह अपेक्षा नहीं कर सकता था की वह दिन के चौबीसों घंटे भेड़ों की रखवाली करता रहे। पशु **चाहे दिन को चोरी हो जाता चाहे रात को**, पर लाबान याकूब से सब हानि के पैसे वसूल किया करता था

आयत 40. हालाँकि उसके ससुर ने उसके इतने वर्षों के परिश्रम के लिए उसकी कोई प्रशंसा नहीं की थी, फिर भी याकूब कठोर परिस्थितिओं में झुंडों की रखवाली करता रहा था। उसने स्मरण किया खुले मैदान के उस अनुभव को जब वह हारान से दूर था: **"दिन को तो घाम और रात को पाला मुझे खा गया था** [देखें यिर्म. 36:30], **और नींद मेरी आँखों से भाग जाती थी।"** झुण्ड के प्रति उसकी चिंता, उसके परिस्थितियों से जूझने और कई अनिद्र रातें बिताने का कारण थी।

आयत 41. दूसरी बार याकूब ने उन **बीस सालों** की ओर संकेत किया जब वह लाबान के **घर** का भाग था, फिर भी लाबान ने उसके साथ दासों सा व्यवहार किया नाकि दामाद जैसा। उसने उन **चौदह वर्षों** का वर्णन किया जब उसने अपने मामा की **सेवा** उसकी **दोनों बेटियों** के लिए की; परन्तु, राहेल और लिआ को शर्मिंदा होने से बचने के लिए, बड़ी चतुराई से विवाह के समय उनके पिता की चालाकी से अदला-बदली करने वाली बात को छोड़ दिया था। फिर उन **छः वर्ष** की सेवा का वर्णन करते हुए जब उसने अपने स्वयं के **भेड़-बकरियों** को उभारा था उसने लाबान पर बेईमानी का दोष लगाया, उसे स्मरण कराते हुए, **"तूने मेरी मज़दूरी को दस बार बदल डाला।"** इसका अर्थ शायद कई बार था। दूसरे शब्दों में, यह व्यक्ति जिसने याकूब का पीछा किया था और उस पर चोरी का दोष लगाया था, स्वयं एक बेईमान धोखेबाज़ और झूठा रहा था। याकूब के कहने का अर्थ था, "तुम सभी भाई-बंधू जो इसके साथ मुझे दंड देने आए हो, वास्तव में उसके छल का शिकार हो चुके हों।"

आयत 42. वास्तव में, यदि याकूब लाबान की धूर्त योजना से बच पाया था, तो केवल परमेश्वर के हस्तक्षेप के कारण, जिसे वह कुलपति **अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का भय** करके बुलाता था। बाद वाले वाक्यांश का अर्थ हो सकता "वह परमेश्वर जिसका इसहाक भय मानता, जिसके प्रति श्रद्धा रखता, और जिसकी आराधना करता था" (देखें यशा. 8:13)। शायद याकूब अपने ससुर को इस प्रकार उत्तर, उसे **बीती रात** के स्वप्न का स्मरण कराने के लिए, दे रहा था, जब परमेश्वर ने उसे चेतावनी दी थी की अपने दामाद से "न तो भला कहना और न बुरा" (31:29)। याकूब ने यह कहना जारी रखा, इस मामले में यदि परमेश्वर उसकी ओर नहीं होता, तो **लाबान उसे छूछे हाथ जाने देता**। ऐसा हुआ नहीं, क्योंकि परमेश्वर ने उस सब को खारिज कर दिया और इस मामले में अपना निर्णय के रूप में उसे **डांटा।**

याकूब और लाबान के बीच वाचा (31:43-55)

**43लाबान ने याकूब से कहा, "ये बेटियां तो मेरी ही हैं, और ये बच्चे भी मेरे ही
हैं, और ये भेड़-बकरियाँ भी मेरी ही हैं, और जो कुछ तुझे देख पड़ता है वह सब
मेरा ही है। परन्तु मैं अपनी इन बेटियों, और इनकी संतान से क्या कर सकता हूँ?
44अब आ, मैं और तू दोनों आपस में वाचा बांधें, और वह मेरे और तेरे बीच
साक्षी ठहरे।" 45तब याकूब ने एक पत्थर लेकर उसका खम्भा खड़ा किया। 46तब
याकूब ने अपने भाई-बंधुओं से कहा, "पत्थर इकठ्ठा करो," यह सुनकर उन्होंने
पत्थर इकठ्ठा करके एक ढेर लगाया, और वहीं ढेर के पास उन्होंने भोजन किया।
47उस ढेर का नाम लाबान ने तो यज्रसहादुथा, पर याकूब ने गिलियाद रखा।
48लाबान ने कहा, "यह ढेर आज से मेरे और तेरे बीच साक्षी रहेगा।" इस कारण
उसका नाम गिलियाद रखा गया, 49और मिज़पा भी; क्योंकि उसने कहा, "जब
हम एक दूसरे से दूर रहें तब यहोवा मेरी और तेरी देखभाल करता रहे। 50यदि तू**

मेरी बेटियों को दुःख दे, या उनके सिवाय और स्त्रियाँ ब्याह ले, तो हमारे साथ कोई मनुष्य तो न रहेगा; पर देख, मेरे तेरे बीच में परमेश्वर साक्षी रहेगा।"
51फिर लाबान ने याकूब से कहा, "इस ढेर को देख और इस खम्भे को भी देख, जिनको मैंने अपने और तेरे बीच में खड़ा किया है। 52यह ढेर और यह खम्भा
दोनों इस बात के साक्षी रहें कि हानि करने के विचार से न तो मैं इस ढेर को पार करके तेरे पास जाऊँगा, न तू इस ढेर और इस खम्भे को पार करके मेरे पास
आएगा। 53अब्राहम और नाहोर और उनके पिता; तीनों का जो परमेश्वर है, वही हम दोनों के बीच न्याय करे।" तब याकूब ने उसकी शपथ खाई जिसका भय
उसका पिता इसहाक मानता था; 54और याकूब ने उस पहाड़ पर मेलबलि चढ़ाया, और अपने भाई-बन्धुओं को भोजन करने के लिए बुलाया; तब उन्होंने
भोजन करके पहाड़ पर रात बिताई। 55भोर को लाबान उठा, और अपने बेटे-बेटियों को चूमकर और आशीर्वाद देकर चल दिया, और अपने स्थान को लौट गया।

आयत 43. धन की लालसा ने लाबान की सोच को विकृत कर दिया था। याकूब को दिया गया उसका उत्तर घमंड से भरा और झूठा था। कानूनन, लाबान के दावे का कोई आधार नहीं था की वे **बेटियां**, **बच्चे**, **भेड़-बकरियाँ**, और **जो कुछ** दिखाई पड़ता था, **वह सब** वस्तुएं उसकी हैं। याकूब ने इन पत्नियों और संपत्ति को प्राप्त करने के लिए लाबान के लिए बीस वर्ष काम किया था; तो अब, अपने भाई-बन्धुओं के समक्ष लाबान अपने आपको एक द्वेषपूर्ण और लालची झूठे के रूप में उजागर कर रहा था।

फिर भी, लाबान के आडम्बरपूर्ण प्रश्न ने हार स्वीकार कर ली थी: **"परन्तु मैं अपनी इन बेटियों, और इनकी संतान से क्या कर सकता हूँ?"** हालाँकि वह पूर्वसर्ग לְ *(ले)* का सामान्य रूप से अनुवाद किया जाता है "को" या "के लिए," उसका अनुवाद "बारे में" भी किया जा सकता है। कई अन्य अंग्रेज़ी बाइबल के अनुवादों में इस प्रश्न में "बारे में" है (NIV; NRSV; NLT; NJPSV; JB; NJB; NEB; REB)। उदाहरण के लिए NIV अनुवाद कहता है, "परन्तु, मैं अपनी इन बेटियों के बारे में क्या करूँ, या इनके जने बच्चों के बारे में क्या करूँ?" इस मामले में परमेश्वर के हस्तक्षेप के कारण (31:24, 42), लाबान उनमें से किसी का भी दोबारा दावा करने में असमर्थ था (देखें CEV; NCV)।

आयत 44. अपने बचे-कुचे सम्मान को बचाने के लिए, उसने यह प्रस्ताव रखा की वे एक **वाचा बांधें** जो उन दोनों के **बीच साक्षी ठहरे**। ऐसा करते हुए, उसने याकूब को अपने झूठे आरोपों से मुक्त कर दिया।

आयत 45. याकूब जानता था की प्रस्तुत किए गए सबूतों ने उसे निर्दोष साबित कर दिया था और लाबान के अहंकार को एक गहरी चोट पहुंचाई थी; परन्तु, उसने अपनी विजय पर जश्न नहीं मनाया। उसने **केवल एक पत्थर लेकर उसका खम्भा खड़ा किया**, जैसा की उसने वर्षों पहले बेतेल में किया था (28:18)।

आयत 46. क्योंकि अतीत में लाबान अपनी कई मौखिक वचनबद्धताओं से मुकर चुका था, इसलिए इस बात में कोई संदेह नहीं कि याकूब कई गवाहों की उपस्थिति में ली गई वाचा के शपथ की निश्चितता चाहता था। उसने **अपने भाई-बन्धुओं** (संबंधियों) को निर्देश दिया **पत्थर इकठ्ठा करने** और उनका **ढेर** (גַּל, *गाल*, "टीला") बनाने का, और उन्होंने उस **ढेर के पास** एक वाचा का **भोजन किया** (देखें 26:30)। प्रत्यक्ष रूप से, इस भोज में उसका ससुर और उसका गोत्र शामिल थे क्योंकि लाबान ने इन पत्थरों के महत्त्व को समझाया था। इस स्मारक की चर्चा आयत 54 में भी जारी रहती है।

आयतें 47-49. लाबान ने उस पत्थरों के ढेर को **यज्रसहादुथा** बुलाया, जो की एक अरामी अभिव्यक्ति है जिसका अर्थ है "गवाहों का ढेर।"[14] पर उसका नाम **याकूब ने गिलियाद रखा।** जिसका इब्रानी भाषा में वही अर्थ है।[15] बीस साल हारान में रहकर, वह कुलपति दुभाषी बन गया था, तो वह उन पत्थरों को समान अर्थी पदनाम दे सकता था। **फिर लाबान ने कहा, "यह ढेर आज से मेरे और तेरे बीच साक्षी रहेगा।"** इसी कारण से उसे **गिलयाद** ("गवाहों का ढेर") बुलाया गया और **मिज़पा** ("पहरे की मिनार") भी। दूसरा नाम लाबान के अगले कथन के शब्द "देखभाल" (पहरा) का खेल है: **"जब हम एक दूसरे से दूर रहें तब यहोवा मेरी और तेरी देखभाल** [पहरा] **करता रहे।"**

आयत 50. इस पड़ाव पर, लाबान ने अपना डर व्यक्त किया कि ऐसा न हो कि उसका दामाद **मेरी बेटियों को दुःख दे**। इब्रानी में "दुःख" के लिए जो शब्द है, עָנָה *(अनाह)*, वह वही शब्द है जिसका प्रयोग सारा के हाज़िर के प्रति कठोर बर्ताव के लिए किया गया था 16:6 में। इसमें शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार का दुर्व्यवहार शामिल हो सकता है। लाबान को इस बात की भी चिंता थी की याकूब उसकी बेटियों के **सिवाय और स्त्रियाँ** ब्याह लेगा। यह गृहस्थी में लिआ और राहेल के स्तर को नीचे कर सकता है। इससे आगे, यदि उन नई पत्नियों ने पुत्र जने, तो वह लाबान के नातियों की विरासत को घटा देगा; याकूब के धन के और अधिक बंटवारे होंगे।

इस चेतावनी के शब्दों द्वारा, लाबान अपने दामाद पर अपना स्वयं का कुटिल और निर्लज्ज बर्ताव प्रकट कर रहा था। लेख के अनुसार, वही था जिसने राहेल के स्थान पर लिआ को बदल कर उनके साथ दुर्व्यवहार किया था, जबकि वह उसकी छोटी बेटी का विवाह होना चाहिए था। लाबान ने कई बार याकूब के साथ छल और दुर्व्यवहार किया था, बावजूद इसके की याकूब कई वर्षों से एक विश्वसनीय सेवक रहा था। यह सब कुछ होने के बावजूद, लाबान याकूब पर उसके जैसा होने का दोष लगा रहा था: धोखेबाज़ और हेरफेर करने वाला। वह अपने निवेदन के व्यंग्य से अनभिज्ञ लगता है जब उसने परमेश्वर को गवाह ठहराया की वह याकूब की देखभाल करे और उसे वाचा को तोड़ने से बचाए।

आयतें 51, 52. इतने वर्षों में भी न बदले **लाबान** ने, **साक्षी** के उस **ढेर** और **खम्भे** को खड़ा करने का श्रेय स्वयं लिया, जिसे न वह स्वयं न ही याकूब **पार** करेंगे एक दूसरे को **हानि** पहुँचाने के उद्देश्य से। लाबान ने शायद उस ढेर और

खम्भे को खड़ा करने में मदद की होगी, परन्तु उसका कथन यह प्रकट करता है की वे केवल उसी के थे, जैसे कि वह दावा करता रहा की उसका दामाद, बेटियां, और झुण्ड सब कुछ उसी का है (31:43)। इस मामले में लाबान गलत था; परन्तु क्योंकि वह अभी तक याकूब पर भरोसा नहीं करता था, वह एक ऐसी गैर-आक्रामक संधि बांधना चाहता था जो उसके साथ मेल-मिलाप को निश्चित करे।

आयत 53. पत्थरों के उद्देश्य को प्रमाणित करने के लिए, लाबान ने शपथ ली, **अब्राहम और नाहोर और उनके पिता; तीनों का जो परमेश्वर है**, उनके नाम में। NASB (अंग्रेज़ी) के अनुसार, ये तीन वाक्यांश अब्राहम (याकूब का दादा), नाहोर (लाबान का दादा), और तेरह (उनका परदादा) के द्वारा आराधना किए जाने वाले एक ही परमेश्वर की ओर संकेत करते हैं।[16] इस मामले में, "परमेश्वर" (אֱלֹהֵי, *इलोही)* के लिए दोहराए जाने वाला शब्द राज-प्रताप की अनेकता के रूप में लगातार समझे जाते हैं।

क्योंकि गृहदेवताओं का लेखा यह संकेत देता है की लाबान बहुदेववादी था (31:19, 30), उसके शपथ का बेहतर अनुवाद हो सकता है "अब्राहम का परमेश्वर और नाहोर का देव" (अंग्रेज़ी: NAB; NJB; NJPSV), जो संकेत करता है की उसके दिमाग में दो देवता थे। यह इस तथ्य से प्रत्यक्ष होता है की उसने इन देवताओं को उन **दोनों** के बीच न्याय करने (इब्रानी में बहुवचन कि क्रिया) के लिए बुलाया। शायद विषमता के लिए, **याकूब ने उसकी शपथ खाई जिसका भय उसका पिता इसहाक मानता था**, या "इसहाक का अद्भुत परमेश्वर,"[17] जिसे उसने "अब्राहम के परमेश्वर" से जोड़ा (देखें 31:42)।

आयत 54. वाचा की शपथ के बाद, **याकूब ने मेलबलि चढ़ाई** और अपने **भाई-बन्धुओं** (संबंधियों) को **भोजन करने** के लिए बुलाया (देखें 26:30, 31; निर्गमन 24:5-11)। आलोचकों ने यहाँ पर एक समस्या का संकेत दिया है क्योंकि आयत 46 में ढेर के पास पहले भी भोजन पर बुलाये जाने का वर्णन है और आयत 54 में याकूब के बलि चढाने के पश्चात भोजन का वर्णन करती है।परन्तु कोई वास्तिक समस्या मौजूद नहीं है। हो सकता है की दो बार भोजन हुए हों उस लम्बे वाचा समारोह के दौरान। दूसरी सम्भावना यह हो सकती है की दोनों वर्णन एक ही घटना की ओर संकेत करते हैं। आयत 46 में, वाचा के भोजन का वर्णन उसकी आशा में किया गया होगा जो वास्तव में आयत 54 में हुआ।

इस समारोह ने एक गैर-आक्रामक संधि की वाचा शपथ पर मोहर लगाई, जो लाबान और याकूब दोनों द्वारा ली गई। इसमें वह बलिदान का भोजन भी शामिल था जिसमें उन्होंने भाग लिया, **पहाड़ पर रात बिताने** से पहले। उनकी एकजुटता उसकी विषमता में ठहरती है जब उन्होंने एक दूसरे के आमने-सामने डेरा डाला हुआ था 31:25 में।

आयत 55. हृदय के घाव एक रात में चंगे नहीं हो जाते; परन्तु, बावजूद इसके की याकूब और लाबान और उनके घरानों के बीच बुरी भावना बरकरार रही, मेल-मिलाप हासिल हो चुका था। उस गुस्सैल और संभावित हिंसक तरीके

से पीछा करने का अंत याकूब और लाबान के बीच वाचा के साथ संपन्न हुआ जिसने निश्चित किया की भविष्य में एक दूसरे के प्रति, एक दूसरे कि संपत्ति और क्षेत्रों के प्रति, आदर रहेगा। इसीलिए, **भोर को** दोनों पक्षों ने, कम से कम बाहरी रूप से, प्रेमपूर्वक विदाई ली। **लाबान उठा**, और **अपने बेटे** [नातियों] **बेटियों को चूमकर और आशीर्वाद देकर** चल दिया। परन्तु, लाबान ने बीस वर्ष पूर्व याकूब का चूम कर स्वागत किया था जब वह पहली बार हारान में आया था (29:13), ऐसा लगता है की इस अवसर पर उसने अपने दामाद के प्रति ऐसे स्नेह का प्रदर्शन नहीं किया था। इस सारे मामले ने उस बूढ़े मनुष्य के घमंड पर एक ज़ोरदार वार किया था, क्योंकि याकूब ने अपने सारे घराने के सामने उसे एक झूठे और छली के रूप में उजागर कर दिया था। जैसे याकूब का परिवार कनान की ओर बढ़ गए, चिढ़चिढ़ा लाबान अपने स्थान को **लौट गया**।

अनुप्रयोग

याकूब की वापसी में परमेश्वर का प्रबंध (अध्याय 31)

याकूब के जीवन में परमेश्वर का प्रबंध कार्य, और उसी के साथ उसका सीधा आदेश, उस कुलपति के कनान की यात्रा शुरुआत करने का कारण बने। परमेश्वर ने याकूब के अपरंपरागत पशुपालन शैली को बहुत अपार सफलता दी (30:37-43)। उसके झुंडों की बढौतरी और इसी के अनुरूप लाबान के पशुओं के घटने के परिणाम स्वरूप लाबान के पुत्रों के स्वभाव में, याकूब के प्रति, बुरा परिवर्तन आया। वे उसकी समृद्धि से इर्ष्या रखते थे, और उन्हें संदेह था की उसने चालाकी से उनके पिता कि जायदाद हथिया ली है, उनकी स्वयं की भावी विरासत को घटाते हुए। याकूब को एहसास हुआ की स्थिति भयंकर होती जा रही थी, विशेषकर जब उसने देखा की उसके प्रति लाबान का स्वभाव भी काफ़ी बदल गया है (31:1, 2)।

यह सब पर्याप्त था याकूब को हारान छोड़कर कनान लौटने के लिए; क्या राहेल और लिआ अपने पिता को छोड़ने और उसके नातियों के साथ इतनी दूर जाने से इंकार करेंगीं? याकूब के दिमाग से जो भी गुज़रा होगा, परमेश्वर जानता था की उस कुलपति को जाना होगा ताकि आमना-सामना होने से टल सके। इसलिए, उसने हस्तक्षेप किया और याकूब से कहा, “अपने पितरों के देश … को लौट जा, और मैं तेरे संग रहूँगा” (31:3)। वास्तव में, यह वही प्रतिज्ञा थी जो बीस वर्ष पूर्व परमेश्वर ने याकूब को बेतेल में दी थी (28:15)।

याकूब ने अपनी पत्नियों से परामर्श किया, उन्हें यह बताते हुए की परमेश्वर ने उसे चेतावनी दी है की वह कनान को लौट जाए, उसके प्रति उनके परिवार के बढ़ते द्वेष के कारण। उसने उन्हें स्मरण कराया की किस प्रकार से उसने बीस वर्षों तक इमानदारी से उनके पिता की सेवा की, फिर वे उससे वेतन के मामले में अनगिनत बार धोखा और छल किया गया। उसने इस बात पर भी ज़ोर डाला की कितनी नीचता से लाबान अपने समझौतों का उल्लंघन करता जब भी परिणाम

उसके पक्ष में नहीं होता था। यह प्रवृत्ति बकरियों और भेड़ों के पालन में स्पष्ट दिखाई देती थी: उनके पिता ने छल से पशुओं की अदला-बदली कर दी थी जिसके कारण, सामान्य स्थितियों में, याकूब का झुण्ड आकार में बढ़ नहीं सकता था। परन्तु, परमेश्वर ने इस बेईमानी को ख़ारिज कर दिया था और याकूब के झुण्ड को बहुत बढ़ा दिया था, तदनुसार लाबान के झुण्ड घट गए थे (31:3-13)।

राहेल और लिआ इससे सहमत थीं की उनके पिता ने न केवल याकूब से छल किया था परन्तु उनसे और उनके बच्चों से उनका भाग वा अंश भी छीन लीया था, उनके “खरीद के मूल्य” को खर्च करते हुए और उनसे “परायों” का सा व्यवहार करते हुए। उन्होंने अपने पति से आग्रह किया, “अब जो कुछ परमेश्वर ने तुझसे कहा है, वही कर” (31:14-16)। अतः याकूब ने अपनी पत्नियों, बच्चों, समस्त पशुओं और संपत्ति को इकठ्ठा किया और कनान देश के लिए निकल पड़ा, बिना अपने ससुर को बताए। उनके निकलने से पहले, राहेल ने, बिना अपने पति की जानकारी के, लाबान के गृहदेवताओं को चुरा लिया (31:17-21)। जब उसके पिता को पता चला की वे गुम हैं, तो उसने सोचा की याकूब ही दोषी है और वह अधिक ख़फ़ा हो गया।

इस तेज़ी से बिगड़ती स्थिति में, याकूब ने सही निर्णय लिया था शांति का रास्ता अपना कर, न कि विरोध करने का, चाहे फिर वह एक डरपोक भगौड़ा ही क्यों न दिखाई दिया हो। निश्चित रूप से, इस कुलपति को परिवार के मध्य में हिंसा को टालने की आवश्यकता थी। यदि झगड़े में परिवार का कोई सदस्य घायल हो जाता या मारा जाता, तो राहेल और लिआ उसके विरुद्ध जा सकती थीं और बच्चों को लेकर उसके साथ जाने से मना कर सकती थीं। हालाँकि, याकूब का पक्ष सही था और उसके ससुराल वाले उसे बदनाम कर रहे थे, उसे लगा की चुपचाप निकल जाना ही सही कार्यप्रणाली होगी।

इसी प्रकार के स्वभाव का प्रदर्शन करना ही, बाद में, यीशु ने अपने शिष्यों को सिखाया: “धन्य हैं वे, जो मेल करानेवाले हैं”; “... बुरे का सामना न करना; परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे” (मत्ती 5:9, 39)। हालाँकि लाबान ने याकूब को शारीरिक चोट नहीं पहुंचाई थी, उस कुलपति ने उन वर्षों के दौरान अपने ससुर के हाथों बहुत मानसिक पीड़ा सही थी। परन्तु, अब जब उसपर संकट आ पड़ा था, याकूब ने निश्चय किया की वह “बुरे का बदला बुरे से नहीं देगा” (रोमियों 12:17); इसके बजाय, उसने निर्णय लिया की वह, जितना संभव हो सके, शांतिपूर्वक और जल्द से जल्द निकल जाएगा। याकूब ने यह एहसास किया होगा, की चाहे हारान के वे बीस वर्ष उसके लिए कितने भी कठिन क्यूँ न रहें हो, वे व्यर्थ नहीं गए थे। परमेश्वर ने अपनी कृपा में उसे आशीषित किया था एक बड़े परिवार, प्रचुर झुंडों, पशु समूहों और संपत्ति से, कनान की भूमि में अपने परिवार के लिए प्रबंध करने के लिए। शायद उसने जिस दुष्प्रयोग और दुर्व्यवहार का सामना किया वह प्रभु की योजना का एक आवश्यक भाग था, उस कुलपति में पवित्र चरित्र को विकसित करने के लिए।

परमेश्वर का अदृष्य हाथ, याकूब को लाबान के क्रोध तथा झूठे आरोपों से

बचाता रहा। लाबान और उसके गोत्र के लोगों ने याकूब के गतिविधियों पर कई दिनों तक नज़र बनाए रखी। इसी दौरान परमेश्ववर ने लाबान पर अपने आपको प्रगट किया। उसने उसे चेतावनी दी, “सावधान रह, तू याकूब से न तो भला कहना और न बुरा” (31:24)। संक्षिप्त में, परमेश्वर ने याकूब को अपने पत्नियों, बच्चों, चरवाहों और जानवरों के साथ कनान वापस लौटने में बाधा न डालने के लिए लाबान को रोका। फिर भी लाबान ने याकूब पर झूठा आरोप लगाते हुए कहा कि उसने उसकी बेटियों और नातियों को उचित रीति से अलविदा कहे बिना “जैसा कोई तलवार के बल से बन्दी बनाए गए हों,” भगाया है। बाद का वक्तव्य हास्यास्पद है, क्योंकि लाबान ने संभवतः जैसा वह कह रहा था वैसा अंतिम विदाई उनको नहीं देनी चाही होगी; लेकिन उसने अपने दामाद पर गंभीर आरोप लगाए कि उसने उसके गृहदेवता चुराए हैं। तब उसने धमकी दी कि उसे याकूब को नुकसान पहुँचाने का अधिकार है, लेकिन परमेश्वर ने उसे ऐसा कदम उठाने से रोक रखा (31:25-30)।

याकूब को डर था कि लाबान बल पूर्वक उसके पत्नियों और बच्चों को ले लेगा। उसने लाबान के खोए गृहदेवताओं के प्रति भी अपनी अज्ञानता दिखाई। अपनी निर्दोषता को साबित करने के लिए उसने यह भी कहा कि यदि उसके लोगों में से किसी ने उन्हें चुराया है तो वह निश्चय मारा जाएगा। इस प्रकार का वक्तव्य उसके प्रिय पत्नी राहेल का प्राण भी ले सकता था। लाबान ने उनकी खोज उनके सामानों में व्यर्थ की। राहेल ने अपने स्थान से जहाँ वह बैठी थी, अपने पिता के सामने खड़े होने से यह कहकर इनकार किया कि वह अभी स्त्रीधर्म से है। उसके पिता ने उसके इस बहाने को स्वीकार किया और उसने जिस काठी पर राहेल बैठी थी वहाँ गृहदेवताओं को नहीं ढूँढा। इसलिए, लाबान का खोए संपत्ति को ढूँढने का परिश्रम व्यर्थ निकला। वह अपने खोए हुए गृहदेवताओं या किसी अन्य चुराए गए देवताओं को याकूब के पास न पाने के कारण व्यथित तथा निराश हुआ। और इस प्रकार याकूब, मामा द्वारा लगाए गए झूठे आरोपों से मुक्त हुआ (31:31-35)।

लाबान का खोए हुए देवताओं की खोज का प्रसंग निरर्थक एंव दुःखद है। सच्चे ईश्वर न तो खोते हैं और न ही चुराए जाते हैं। इन देवताओं की निर्बलता का कारण यह है कि न तो उनमें जीवन है और न ही उनका कोई अस्तित्व। बाइबल के अनुसार खोने की अवधारणा, इस दृष्टिकोण से हट कर हैः यह तो लोग हैं जो खो जाते हैं न कि ईश्वर। जिस तरह भेड़ जान बूझकर या असावधानी के कारण भटक जाता है वैसे ही लोग, परमेश्वर के उपस्थिति से भटक जाते हैं। अच्छा चरवाहा (पुराने नियम में परमेश्वर और नए नियम में मसीह) जब खोए हुओं को ढूँढने निकलता है तो उसके पास खोए हुओं को ढूँढने का ज्ञान तथा उनको उनके मूल स्थान में स्थापित करने की क्षमता है (49:22-25; भजन 23:1-6; 40:9-16; लूका 15:3-7; यूहन्ना 10:10-18)।

राहेल का लाबान के देवताओं को चुराने के आरोप को हल्के में नहीं लिया जा सकता है और न ही उसके इस कार्य को अनदेखा किया जा सकता है। इसके

विपरीत कि लाबान, राहेल और लिआ के प्रति कितना भी अन्यायी क्यों न रहा हो और चाहे वे मूर्तियां उनके लिए अर्थहीन ही क्यों न रहीं हों, उसका उसके पिता के गृदेवताओं को चुराना एक गंभीर अपराध है। उसके झूठ ने उसके पिता को घाटे में डाल दिया। यदि वह अपने शारीरिक दशा वर्णन करने में ठीक भी हो, तौभी वह अपने पिता के सम्पत्ति को बिना अनुमति के ले जाने और झूठ बोलने की दोषी थी। परमेश्वर के लोगों को कभी भी "दो गलती एक सुधार" के सिद्धांत को तार्किक आधार पर उचित नहीं बताना चाहिए।

अंततः, याकूब का क्रोध लाबान पर फूट पड़ा। उसने अपने बीस वर्ष बिना कारण के लाबान के हाथों दुरुपयोग किए जाने का कारण पूछा। उसने अपने ससुर के उस पर बेईमानी के दोषारोपण को चुनौती दी और उससे उसके इस दोषारोपण का प्रमाण मांगा। याकूब ने कहा कि वह लाबान के प्रति हर एक ज़िम्मेदारी को निभाने के लिए सत्यनिष्ठ रहा। कई बार, जबकि वह किसी जानवर के मौत का ज़िम्मेदार भी नहीं था, तब भी उसने लाबान के दोषारोण का शिकार होने के बजाय, उसकी भरपाई की। उन सभी वर्षों के विश्वासयोग्य सेवा के बदले, उसके मामा ने उसकी प्रशंसा करने के बजाय उसे धोखा दिया और "दस बार" उसकी मज़दूरी बदली। यदि परमेश्वर का हाथ उस पर न होता, तो उसका ससुर उसे छूछे हाथ भेजा देता। उसने कहा, "मेरे दु:ख और मेरे हाथों के परिश्रम को देखकर परमेश्वर ने बीती हुई रात में तुझे डपटा" (31:36-42)।

क्योंकि जिस प्रकार याकूब ने अपने पिता और भाई को धोखा दिया उस दृष्टिकोण से देखा जाए तो लाबान का उसके साथ इस प्रकार का व्यवहार न्यायसंगत जान पड़ता है। इन सारी घटनाओं में परमेश्वर का हाथ सदैव कार्यरत था। याकूब को यह सीखना था कि "विश्वासघातियों का मार्ग कड़ा होता है" (नीति. 13:15)। संभवतः कुलपति को इस प्रकार का दुर्व्यवहार सहने देने के द्वारा, परमेश्वर उसके चरित्र को दृढ़ कर रहा था और उसको यीशु के यह वचनः "इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उन के साथ वैसा ही करो" सीखा रहा था (मत्ती 7:12)। कनान में याकूब का पाप यह था कि उसने अपने आपको ही केंद्र बनाया और वह किसी को भी रौंदता था - चाहे वह कोई भी क्यों न हो - पिता हो या भाई - जो भी उसके मार्ग में आए, उनको उसने नहीं छोड़ा। हारान में बीस वर्ष लाबान के हाथों प्रताड़ित किए जाने के पश्चात उसने यह सीखा कि परिवार के किसी सदस्य से दुर्व्यवहार सहने का परिणाम कैसा होता है। हालांकि, उसने लाबान को उसी के शब्दों में जवाब नहीं दिया, अन्यथा उसे सब कुछ खोना पड़ता।

जो याकूब के समान परमेश्वर के सुरक्षा में हैं, उन्हें अन्य लोगों के साथ बदले की भावना से नहीं बल्कि शांति पूर्ण तरीके से रहना चाहिए। लाबान को स्वप्न में परमेश्वर की चेतावनी, उसके चुराए गए सम्पति को दामाद के सामानों में न ढूँढ पाना और याकूब का ज़ोरदार बचाव ने लाबान को यह बता दिया कि वह एक हारा हुआ व्यक्ति है। धोखा देने वाले ने हमेशा यह प्रस्तुत करने का प्रयास किया कि उसके साथ ठीक नहीं हुआ है। लाबान ने अपनी गलतियों को माने बिना,

याकूब पर झूठे आरोप लगाए कि पुत्रियां, उनके बच्चे और पशु उसके हैं। अपने आपको मेल कराने वाला बताकर, उसने यह सुझाव दिया कि उनके दोनों समूह के लोगों की गवाही हेतु, उसके और याकूब के मध्य मेल की वाचा बांधी जानी चाहिए (31:43, 44)।

याकूब इस वाचा से सहमत था इसलिए उसने पत्थर का एक खंभा खड़ा किया जबकि अन्य लोगों ने पत्थरों का ढेर लगाया कि वे इस बात के गवाह हों कि इन दो गोत्रों के मध्य शांतिपूर्ण संबंध स्थापित हो चुका है। लाबान ने इस वाचा को स्वीकार तो किया परंतु उसने यह आशंका भी जताई कि उसका दामाद भरोसे के लायक नहीं है। वह उसके पुत्रियों के संग दुर्व्यवहार करेगा और वाचा का पालन नहीं करेगा। उसने स्पष्ट रूप से यह प्रगट किया उन दोनों समूह के मध्य वाचा तोड़ दी गई तो वह इसका ज़िम्मेदार नहीं होगा। उसने याकूब को दोषी समझा जिसे नियंत्रित करने की आवश्यकता थी। पत्थरों का ढेर उन दोनों गोत्रों के मध्य पहरेदार या सीमा ठहरेगी जो उन्हें स्थायी रूप से अलग अलग रखेगा (31:45-52)।

तत्पश्चात, पश्चिम एशिया के परंपरा के अनुसार, लाबान और याकूब के लोगों ने एक साथ भोजन किया और उन्होंने यह शपथ खाई कि वे इस वाचा से बंधे रहेंगे (देखें 26:26-33)। भोजन के पश्चात उन्होंने पहाड़ पर रात्रि बिताई। भोर को, लाबान ने अपने पुत्रियों और नातियों को चूमा और उन्हें आशीर्वाद देकर, वह और उसके लोग हारान को लौट गए। इस विदाई के घड़ी में याकूब का वर्णन नहीं है तो ऐसा प्रतीत होता है कि लाबान अपने दामाद को नहीं मिलना चाहता था और इन दोनों व्यक्तियों के मध्य वास्तविक समझौता नहीं हुआ था। लाबान का लोभी और हठीला हृदय उसे उसके भांजे के प्रति किसी भी प्रकार का अपराध स्वीकार करने से रोकता रहा; शांति की वाचा की यह प्रक्रिया, दोनों प्रतिद्वन्दियों के मध्य, केवल अनाक्रमण समझौता था (31:53-55)। लाबान ने दुःख देकर याकूब के साथ दुर्व्यवहार किया लेकिन कुलपति ने अपने ससुर को वैसा बदला नहीं दिया जिसका वह हकदार था।

समाप्ति नोट्स

[1]इस पूरे भाग में परमेश्वर की सुरक्षा और प्रबंध पर ज़ोर दिया गया है (31:3, 5, 7, 9, 13, 16)। [2]मन्नत का ज़िक्र लाना इस बात को स्मरण कराना था कि याकूब ने जो कुछ परमेश्वर उसे देगा उसमें से परमेश्वर को “दसवाँ भाग” देने का वादा किया था (28:22)। [3]लाबान ने यह कहा की उसे इस बात के बारे में दिव्यज्ञान से पता चला था (30:27)। हो सकता है उसके गृहदेवताओं का प्रयोग इसी उद्देश्य के लिए किया जाता था (देखें यहेज. 21:21; सपन्याह 10:2)। [4]थिओफ़िलुस जे. मीक, ट्रांस, “सेल ऑफ़ एडॉप्शन,” इन *एन्शंट नियर इस्टर्न टेक्स्ट्स रिलेटिंग टू दी ओल्ड टेस्टमेंट*, तीसरा संस्करण, सम्पादकीय जेम्स बी. प्रिचर्ड (प्रिंसटन, एन.जे. : प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1969), 219-20. [5]इ. ए. स्पाइजर, *जेनेसिस*, दी ऑथर बाईबल, वोल. 1 (गार्डन सिटी, एन. वाय.: दबलडे, 1964), 250. [6]विलियम वाइट, רָדַף, *TWOT* में, 2:834. [7]ब्रूस के. वाल्टके, *जेनेसिस: ए कमेन्ट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंदेर्वन पब्लिशर्स, 2001), 428. [8]यहाँ पर इब्रानी